بسم الله الرحمن الرحيم

# सफ़र नामा

## मेरी हकीकत

यूं तो इस जिंदगी ने ना जाने कितने सफ़र किए चाहे वो सफ़र हमारे स्कूल और कॉलेज का हो या फिर हमारा तिजारती सफ़र हो या फिर घूमने फिरने के हिसाब से इहलो-अवाल के साथ वाला सफ़र हो. इन तमाम सफरों में मैंने बोहत कुछ सीखा और वक्त के गुजरते-गुजरते इन् सफरों की यादो को भूलता गया लेकिन एक सफ़र जिसकी यादें और गुजरे हुए वाकियात हमारे ज़ेहन में आज तक जिंदा है और वो सफ़र जिसकी प्यास और खुसबू आज तक हम नहीं भूल पाए ऐसा महसूस होता है की एक प्यासा पानी की चंद बूंदों को पाने के लिए लगातार एक कुएं की तलाश में चलता चला गया और जब वोह कुवां उसको मिल गया तो उस कुएं के पानी से बार बार अपनी प्यास बुझाता रहा और आज तक मैं उस इंतज़ार में हूँ की कब मुझे सफ़र-ए-काबा और मदीने का मौका मिले ताकि मैं इस मीठे कुएं से बार बार अपनी प्यास को बुझाता रहूँ और यह ऐसा सफ़र बन जाये जो कभी ख़तम ही ना हो. उम्मीद करता हूँ के आप भी मेरी तरहा इस सफ़र पर चलने की तवक्को रखेंगे और अपनी प्यास को बुझाएंगे.

शुक्रिया.

आपका

नुसरत आलम शेख

**आज** की रात नींद को भूल गयी आँखें , खुली हुई है ज़ेहन में खाना -ए -काबा और काबे का काबा का मंज़र नज़र आ रहा है. पर १० अक्टूबर २००२ , रात २ बजे की कैफियत का आलम है क्युकी अभी कुछ घंटे पहले ही तो हमारे चाहने वाले हमारे जिगरी दोस्त हमारे वालिदे माजिद के पैगाम देकर गए है हमारे लिए मुबारक बाद और वापस आने की दुआएं मिल चुकी है हमारे गले को गुलाबों की महक से सजा कर गले मिलकर और आँखों को नम कर के रुक्सत हुए .

सुबह फज़र पढ़ कर तैयार हो कर हमारे घर के लोग हमें एअरपोर्ट के लिए विदा कर रहे हैं हमारी जौज़ा तो कुछ बोल नहीं पा रही है , हमारा फूल जैसा बेटा "लारैब " अपने बाप को एयर -पोर्ट तक छोड़ने की तमन्ना रखते है लेकिन स्कूल जाना है इस लिए खमोश हो गए और बोसा देकर रुक्सत हो गए. सफ़र टैक्सी से शुरू हो कर एअरपोर्ट पर रुका और अपने अजीजों से गले मिल मिल कर एअरपोर्ट में दाखिल हो गए अब मेरे साथ मेरा ज़रूरी सामान और हम और अल्लाह और उस-के हबीब के घर की तस्वीरे बस दिल में एक अजीब सी बेचैनी के कब वक्त आये और हम जहाज़ में सवार हो और अपने बेताब दिल को सुकून मिले. यह सब सोच रहा था के अचानक वोह ज़रूरी कार्यवही शुरी हो गयी एक मशीन में मेरे बैग डाल दिया गया कुछ एक मिनट में व्हो बहार आगया और उसमे हमारे नाम का लिखा लेबल लगा दिया गया फिर एक दूसरी लाइन में खड़े हो गए ताकि वीसा की जांच पूरी हो और यह भी काम पूरा हो गया फिर एक और लाइन मिली ताकि अपना सामान लगेज में डाल सके , आखिरकार ये काम पूरा हो गया अब हम सामान की फिकर से आज़ाद हो गए और वक्त आया इमीग्रेशन का. यहाँ एक काफी लम्बी लाइन थी इसमें तक़रीबन आधा घंटा लगा यहाँ से हमे एक बोर्डिंग पास मिला और इस के आलावा एक और फॉर्म मिला जिसे पढ़कर भरना था इसलिए हमें यहाँ ज्यादा वक्त लगा . फिर यहाँ से कस्टम से गुज़रते हुए गेट नो.८ पर एक बार लाइन लगनी पड़ी यहाँ पर हमारी तलाशी ली गई क्युकी आज कल देहशथगर्दी का महोल है

और कई बार देहशाथ्गार्दो ने जहाज़ को अगवा कर लिया और अपने मन मुताबिक शर्ते पूरी करवाई इस लिए यहाँ पर कड़ी शक्त जांच की जाती है यह जांच पूरी होने के बाद जहाज़ में दाखिल होने की इजाज़त मिली यहाँ जहाज़ पर अपनी कुर्सी पर बैठ कर एक सुकून महसूस किया के अब सफ़र शुरू होने वाला है और जैसे ही हवाई जहाज़ ने जमीनी सतह को छोड़ कर आसमान की खूबसूरत वादियों में दाखला लिया और जहाज़ जैसे जैसे अल्लाह के घर की तरफ बढ़ता जा रहा था वैसे वैसे चेहरे पर मुस्कान बढती जा रही थी और दिल में यही ख़याल आ रहा था के जब अल्लाह के घर में दाखिल होऊंगा तो कैसे देख पाउँगा वहाँ कौन हमें रास्ता बताएगा कौन आर्कान सिखाएगा क्युकी मेरे साथ तो कोई भी "मो-अल्लिम" नहीं है, लेकिन फिर एक बार दिल ने दिलासा दिया क्यों फ़िक्र करते हो अल्लाह ने अपने घर बुलाया है और वोही सब इंतज़ाम पूरे करेगा हमें फिक्रमंद होने की कोई ज़रूरत नहीं जहाज़ में मौजूद लड़कियां जिनका काम पेस्संज़रो की मदद करना उनको चाय, ठंडा पिलाना खाना पेश करना है वोह बारी-बारी से आकर अपनी ड्यूटी पुरि कर रही थी कोई अखबार पेश कर रही है तो कोई चाय पेश कर रही है यह सभी मुसलमान अरबी बोलने वाली जो अपनी शक्लो पर मुस्कान लिए हुए सब की खिदमत में पेश हो रही है अब सवाल यह उठता है के जिस औरत को इस्लाम ने ढक कर रहने को कहा उसे आप बेपर्दा कर रहे है क्या यह काम मर्द नहीं कर सकते इसके आलावा हवाई जहाज़ के अन्दर ज्यादा तर मुसलमान और उमरा करने वाले मुसाफिर ही मौजूद हैं जो अल्लाह और उसके हबीब का घर देखने जा रहे हैं रास्ते भर तस्बीह और सूरेह पढ रहे हैं लेकिन यह क्या यहाँ तो स्क्रीन पर पिक्चर दिखाई जा रही है जिसे इस्लाम ने गुनाह करार दिया है जिसमे औरतो की नुमाइश हो रही है और यह जहाज़ भी तो मुस्लिम मुल्क सऊदी-अरब का है किसी काफ़िर मुल्क का तो नहीं जहाँ मजबूरी है सवाल यह उठता है के यह कैसे मुसलमान है जो अपनी शरियत तोड़ रहे है अल्लाह से दुआ है के ऐसे मुसलमानों को अक्ल अत फरमाए आमीन.

हमारी बराबर की सीट पर दो बुज़ुर्ग बैठे थे जो की गुजरात से आये हुए थे और एहराम बंधे हुए थे. जिनसे हमारी गुफ्तगू होती रही वोह मुझसे काफी मुतास्सिर थे जैसे जैसे सफ़र कट रहा था दिल में मौजूद तमन्नाए एक गैबी चुम्बक की तरह खिची जा रही थी यह एक अनोखा सफ़र था जो बेताबियाँ बढ़ाता जा रहा था और येही कह रहा

था अब मंजिल करीब है, लेकिन इसी बीच हमारी सोच को तोडती हुई एक आवाज़ आई के आप अपनी सीट के बेल्ट को कस लें क्यों की जहाज़ रियाध एअरपोर्ट पर उतरने वाला है और अगले ही कुछ मिनटों में हमारा जहाज़ आसमान से ज़मीन पर आ लगा इस एअरपोर्ट पर जहाज़ एक घंटे तक रुका रहा यहाँ से कुछ दुसरे मुसाफिर चढ़े मुझे मालूम पड़ा यहाँ पे फैक्ट्री वगैरह बोहत ज्यादा है यानी ये सऊदी अरबिया की कैपिटल है फिर जहाज़ पर एक और ऐलान हुआ की आप सभी मुसाफिर अपनी सीट बेल्ट को कस लें क्युकी जहाज़ जेद्दाह एयरपोर्ट के लिए रवाना होने वाला है और हम सब ने वैस ही किया और एक बार फिर जहाज़ बदलो को चीरता हुआ परवाज़ करने लगा और शायद अपनी आवाज़ में कह रहा था "लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक  लब्बैक ला शारिका लब्बैक इन्नल हमदा वल नेमता वला लकल मुल्क लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक" और इस तरहा  आँखों में और दिल में अल्लाह के घर यानी खाना-ए-काबा की तस्वीर सजाए जेद्दाह एअरपोर्ट पर पोहंच गया यहाँ पर फिर वोही जरूरी कारवाही हुई यहाँ का निज़ाम भी सही नहीं लगा क्युकी इतनी दूर से चला इंसान बैठे बैठे थक चूका होता है और उसके बाद यहाँ घंटो लाइन लगाना और उसमे भी अपने मुल्क के लोगो के लिए बिना लाइन में लिए सीधे मुखातिब होना यानि उनकी तरफदारी करना क्या यह अच्छी बात है ?  कम से कम उम्रे वालो , हज वालो के लिए तो खुसूस इन्तेज़ामात होने चाहिए खैर आखिर कार इमीग्रेशन  से बाहर निकल कर एक बार फिर पासपोर्ट की चेकिंग हुई और उसने मुझे एक शक्श के हवाले कर दिया यह कहते हुए की उमरा-उमरा मैं समझा के शायद कोई अपना खैर-ख्वा होगा मुझे उमरा करने का तरीका बताया गया इसी ख़ुशी में उसके साथ एक खिड़की पर पोहंचा तो उसने मेरा टिकेट माँगा और पासपोर्ट  लेकर उसकी ज़ेरॉक्स निकाली उसने मेरा पासपोर्ट तो वापस कर दिया लेकिन टिकेट अपने पास रख लिया अब मैं परेशान की या-अल्लाह ये कौनसी नई मुसीबत खाड़ी हो गई  मैं उस से इंग्लिश में बात करने लगा लेकिन शायद वोह हमारी ज़बान नहीं समझ रहा था इस लिए वोह मुझे एक दूसरी खिड़की पे ले गया शायद यहाँ का शक्श पाकिस्तानी बाशिंदा था तो उसने मुझे तरीके से समझाया जो लोग उम्रे के वीसा से आते है वोह अपना टिकेट यहाँ के निजामिया को सौंप देते है और जब आप वापस एअरपोर्ट पर आएँगे इंडिया जाने के लिए तो यह आप को वापस करदेंगे.

एअरपोर्ट से बहार निकल कर मसला था की किस तरह अपने होटल तक पोहंचा जाए फिर उसी पाकिस्तानी शक्श ने एक ड्राईवर को आवाज़ दी शायद यह भी पाकिस्तानी था उसने कहा आप इन्हें होटल अल-अजीजिया पर छोड़ दें ड्राईवर ने कहा मैं ५० रियाल लूँगा मैं राज़ी हो गया उसके साथ टैक्सी में बैठकर मैं अपने मुकाम पर पोहंचा गया हमने उसको वादे के मुताबिक ५० रियाल अदा कर दिए . होटल के कमरे में मैं आराम करने लगा कुछ देर के बाद एक शक्श मेरे पास आया और बोला मेरा नाम अमजद है मुझे याहियाः साहब ने आप के पास भेज है आप मेरे साथ ऑफिस पर चलें वहां जा कर उन लोगों ने मुझे उमरा पर जाने के लिए रास्ता बताया फिर मैंने थोडा बोहत खाने पीने का सामान ख़रीदा और अपने रूम पर पोहंचा गया काफी थकावट महसूस हो रही थी तो मैंने नाहा-धो कर अपने कपडे वगैरा बदले और नमाज़ के लिए खड़ा हो गया नमाज़ से फरीक होने के बाद थोडा बोहत खाया पिया और बैठ कर सोचने लगा के कल मक्के का सफ़र कैसे तय किया जाए क्युकी यह सफ़र भी मुझे अकेले तय करना है तो मैंने अपना ऐराम निकाल और दोनों टुकडो को नापा इस में एक टुकड़ा दुसरे टुकड़े से बड़ा था तो मैंने तय किया के ये टुकड़ा निचे बांधेगे और दूसरा टुकड़ा ऊपर बांधेगे मैं अपने रूम में अकेला तनहा इसी डर में के कहीं तरीका गड़बड़ ना हो जाए तो मैंने सोचा के क्यों न प्रैक्टिस की जाए ये सोचते ही हम ने फ़ौरन ऐरम बांधने की प्रैक्टिस शुरू कर दी और जब पूरी तरह मुतमईन हो गया तो चैन की सांस ली और पूरी तैयारी को अंजाम देने के बाद अपने बिस्तर पर लेट गया और "लब्बैक अल्लाह हुम्म लब्बैक" की प्रैक्टिस करने लगा काफी देर तक रटने के बाद जब पूरी तरहा याद हो गया तो "लगे हरम को आँखों में बसाना कैसा होगा वोह मंजर वोह नूरानी माहौल कैसे-कैसे अल्लाह के चाहने वाले कहाँ कहाँ से आए होंगे. हरम में किस दरवाजे से दाखिल होना चाहिए ? क्या दुआ मांगी जाये ? बस खाना-ए- काबा को अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने देना चाहता था अब रात काफी हो चुकी थी दिल में ख़याल आया के चलो भाई अब आँखों को आराम दो. सुब्हा अल्लाह के घर पर पोहंचना है यह सोच कर सोने की कोशिश में लग गया और फिर कब आँख लगी मुझे ख्याल नहीं. सुबह तहज्जुद पढ़ कर फजर की नमाज़ पढ़ी और फिर आराम करने के इरादे से सो गया सुबह ९.३० बजे आँख खुली फ़ौरन नह धो कर नाश्ता किया और ऐरम बांध कर "लब्बैक अल्लाह हुम्म लब्बैक" पढ़ते हुए होटल से बहार निकला और पैदल चलते चलते बस अड्डे पर पोहंचा वहां पोहंच कर टिकेट लिया और ११.३० बजे की

बस पर बैठ गया दिल में बेकरारी अब कुछ ज्यादा ही बढ़ गई क्युकी अब यह तै हो गया के यह बस अब हमे मेरी मंज़िल पर ही छोड़ेगी और जैसे ही बस ने स्टेशन छोड़ा  बस अब रास्ते भर आँखों में एक तमन्ना  कब हमारे रब का घर नज़र आजाए आँखें रास्ते भर काबे को ढूँढती फिर रही है. जब भी कोई दूर से छोटी मोटी बस्ती नज़र आए दिल ने येही समझा शायद मेरे पैदा करने वाले के घर का दीदार होने जा रहा है लेकिन अगले ही पल ख़याल टूट गया क्यों की मैंने अपने बाजू में बैठे हुए शक्श से पुछा के काबा कितना दूर है ?  तो उसने कहा अभी काफी वक्त लगेगा रस्ते के दोनों तरफ सूखे पहाड़, जिसमे से गर्मी निकल रही है और हर कुछ मक्सूस दूरी पर होर्डिंग लगी हुई थी "अल्लाह हु अकबर'' यह होर्डिंग भी हमें सबर करने को केह रही थी के "थोडा और सब्र मंजिल बस कुछ ही दूरी पर है हिम्मत मत हरो" सब्र से काम लो ज़रूर तुम्हारी आँखों को ठंडक पोहंचेगी. क्या करू ? रब के कितना समझाने के बावजूद दिल में वोही हलचल के कब आएगा ? कब आएगा ? और दिल में "लब्बैक अल्लाह हुम्मा लब्बैक" पढ़ते हुए चले जा रहे थे आगे बढे जा रहे थे के अचानक लॉग बस में बोलने लगे के देखो यह मक्के वालों के लिए मिकात है मक्के वाले यहाँ पर इकट्ठा  हो कर ऐरम बांधते है और दो रकात नमाज़ यही अदा करके फिर हरम के लिए निकलते है अभी यह गुफ्तगू चल ही रही थी के एका-एक हरम का बड़ा गेट चमकता नज़र आया बस अब आगे मत पूछो किस वक्त बस से निचे उतरा इस का भी ख़याल नहीं रहा उसी गेट की सिम्त में चलते चलते हरम के उस गेट नो.७९ में दाखिल हो गया मेरी आँखें खानाए काबा को ढूंढ रही है आज जुमा का दिन है लाख़ों मुसलमान झुण्ड के झुण्ड हरम में चले आ रहे है. जिस  दरवाज़े पर नज़र दौडाओ  जैसे फौज की फौज घुसती चली आ रही है और हम जो के यहाँ के रास्तो से अनजान लेकिन फिर भी ज़र्रा भर भी यह एहसास नहीं के मैं पहली बार तशरीफ़ लाया हूँ. इसी वक्त जुमा की अज़ान की आवाज़ अनि शुरू हुई तो हमने भी सोचा चलो हम भी कहीं किसी सफ में खड़े हो कर नमाज़ अदा कर लें और फिर अल्लाह का घर देखेंगे तो सफ में खड़े हो कर २ रकात नमाज़ तैयातुल मस्जिद पढ़ी और खुदबा सुनने  बैठ गए खुदबा जब ख़तम हो गया तो ऐसा लगा के अपने रब के घर को ढूँढे पता नहीं क्या बात थी के एक डर महसूस हुआ के क्या हमारी आँखें इस काबिल है के अल्लाह के घर को देख भी सकती है या नहीं ?. यही डर सताए हुए था तभी तो हरम में पोहंचने के बाद भी अल्लाह के घर को देखने की ताब नहीं हो रही थी. लेकिन यह क्या  ? काबा तो हमारे आँखों के सामने

मौजूद है वाह रे खुदाया ! तू कितना मेहरबान है मुझपर के मैं इतना डर रहा था आप ने तो मेरा सारा डर ही निकाल दिया (सुब्हान-अल्लाह)! अब मेरी नज़र कहीं भी नहीं जा रही है मानो जैसे एक मैगनेट की शक्ल में काबा जो मुझ-जैसे लोहे के एक अदना से टुकड़े को अपनी ही तरफ ताकत से खींच रहा है और अब इस लोहे के टुकड़े ही क्या मजाल जो टस से मस हो. हमारी निगाहें अपने रब के घर को बस देखे ही जा रही है और दिल में ख़ुशी के आँसूं और लबों पर अल्लाह से तौबा और माफ़ी और पूरे आलमें इस्लाम के लिए फलहा और सिरातल-मुस्तकीम पर चलने की गिड़-गिडाते ऐ अल्लाह ! हमारें मुसलमान भाइयों की मुश्किलें आसान फरमा ' उनकी बिगड़ी बना दे उनके गुनाह माफ़ फरमा- हम जिस जगह खड़े थे वोह हरम की पहली मंजिल थी फिर हमारे अन्दर बेताबी , समुंदरी लहरों की तरह उमढ पड़ी के अब हम अल्लाह के घर से चिपक जाए ये सोचते ही हम दौड़ने जैसी हरकत में तेज़ी से कदम बढाते गए और अगलेही पल हम अपने रब के घर के आँगन में मौजूद थे अब ना पूछे इस ख़ुशी को , आज मैं बेखौफ अपने खुदा के घर में मेहफूज़ इतना मेहफूज़ मैंने आज तक अपने को महसूस नहीं किया था. यहाँ पोहंच कर मैं दुनिया भूल गया और अब दुनिया में वापस जाने को दिल नहीं करता. बस यह निगाहें इस काबे पर ही टिकी रही और अल्लाह-पाक अपने करम से मेरे और मेरे खानदान के लोगों के गुनाहों को माफ़ करदे बस इसी तमन्ना के साथ आँखें काबे को देख रही हैं हमने वहाँ पर एक अजीब-ओ-गरीब मंज़र देखा की यह तो सब मुसलमान लेकिन सब का तवाफ़ के दौरान अपना अपना तरीका था उनकी भाषा भी अलग थी, उनका डील डौल भी अलग, उनका रंग रूप भी अलग, लेकिन अल्लाह ताला ने तवाफ़ से बाब को एक कर दिया- अब यहाँ पर रंग और बू मुल्क और ज़बान का कोई भेद नहीं रहा सब को एक एहराम के लिबास में एक कर दिया "सुब्हान अल्लाह" हमें यहाँ पर उन काफिरों का मुशरिको का भी ख़याल आया के ऐ अल्लाह! उनको भी सीधा रास्ता दिखा दे और वोह लोगों को भी अपने घर का दीदार करा दे और तूने जिस तरह हमारी हिफाज़त की उसी तरह उन सभी की हिफाज़त कर.

हमने सोचा की तवाफ़ कहाँ से शुरू करे तो हमने सोचा के लाओ किसी शक्श से पुछा जाए लेकिन सवाल यह था कोई ऐसा शक्श मिले जो या तो इंग्लिश बोलना जानता हो या फिर हिंदुस्तानी, इस लिए निघाएँ ढूंढ रही थी तभी

हमारी नज़र दो लोगों पर पड़ी  जो ऐराम बांधे हुए एक किनारे पर बैठे हुए थे तो मैंने सोचा शायद ये तवाफ़ कर चुके है क्यों न उन्ही लोगों से पुछा जाए यह सोचते ही मैं इनके पास पोहंच गया और कबल इसके के मैं पूछू वोह (दोनों शक्श जो एक जवान थे और दूसरे उम्र दराज़) खड़े हो गए और कहने लगे सब खैरियत है, जैसे कोई पुराने मिलने वाले हों , इस वक्त हमारा मकसद सिर्फ यह पूछना था के तवाफ़ कहाँ से शुरू करें और हमने ऐसा ही किया तो वोह दोनों एक साथ बोलने लगे  के इस कोने पर एक पट्टी बनी हुई है आप वहां पर पोहंचे और बिस्मिल्लाह करे उसी दरमियान बड़े वाले ने छोटे वाले को खमोश करते हुए कहा चुप तो रहो. मैं समझा तो रहा हूँ  ? यह केह कर उस शक्श ने मुझे रास्ता बताया और मैंने उनका शुक्रिया अदा किया और वहां से आगे बढ़ते हुए संगे- अस्वाद के पास से खिची हुई लकीर पर पोहंचे. यहाँ पर सब लोग खड़े हो कर  संगे- अस्वाद की तरफ मू करके तीन बार हाथ उठा कर "अल्लाहु-अकबर" केह कर वहाँ से तवाफ़ शुरू कर रहें है  हमने भी कांपते हुए होटों से (अल्लाहु-अकबर) तीन बार कहा और तीसरा कलमा पढ़ते हुए तवाफ़ शुरू किया. जिस जगह पर वोह दोनों शक्श हमें बैठे मिले थे जब मैं उस जगह से गुजरा तो वोह वहाँ पर मौजूद नहीं थे  हमें ताज्जुब हुआ, लेकिन अब हमे अपनी मंजिल मिल चुकी थी और निगाहें खाना-ए-काबा पर थी . (पहला चक्कर), (दूसरा चक्कर),तीसरा चक्कर और चौथे चक्कर में सिर्फ पूरें आलम के मुसलमानों के लिए रहमत, बीमारियों से शिफा, बेरोज़गारी से छुटकारा और मुसलमानों की बहनों और बेटियों के जाईज़ रिश्तों की दुआ करता रहा, अल्लाह उसे क़ुबूल फर्माले  कई बार तवाफ़ के दौरान दिल भर आया गला रूंद गया लेकिन अपने पर कण्ट्रोल रखा यह कहते हुए की पहले ७ तवाफ़ पूरे कर लो ताकि जिस्म अल्लाह के नूर से लबरेज़ हो जाये फिर लिपट कर रोएंगे अपने खुद के घर से. और हमारा जिस्म जो तवाफ़ के पहले कमज़ोर था और इस लायक नहीं था की अल्लाह के घर का दरवाज़ा हो भी सकूं लेकिन तवाफ़ करने के बाद अल्लाह इस जिस्म को पाक कर देगा क्युकी हम साइंस में यह पढ़ चुके है के ये सूरज ये चाँद, ये सितारे ये परिंदे और ना जाने अल्लाह की बनायी हुई कितनी शय अल्लाह के इस घर का तवाफ़ कर रही है और दिन दुगनी और रात चौगुनी अपने नूर में इजाफा कर रहे है और हम यह भी जानते हैं की यह तो मरकज़ है ग्रेविटेशनल फोर्स का जो हमारे जिस्म में  मौजूद हर किस्म की बीमारी को नेस्त-नाबूद कर देता है, तो आज तवाफ़ करके हम अपने जिस्म को ऐसा महसूस कर रहे है जैसे मैं अभी अभी पैदा हुआ हूँ क्युकी अब मेरे

अन्दर कोई बीमारी नहीं  रह गई बिलकुल हल्का फुल्का महसूस कर रहा हूँ . पांचवे चक्कर, छठा चक्कर और सातवे चक्कर में हमारे अपने पूरे अहलो-अवाल के लिए दुआ की.  सातवा  चक्कर पूरा करके कुछ अपने लिए माँगा फिर दो रकात नमाज़ नफिल हातिम में जाकर पढ़ी और अल्लाह से इसे क़ुबूल करने की दुआ की अब काबे के सोने के बने दरवाज़े को  पकड़ कर अपने ऊपर काबू ना रहा उसी दरमियान मैंने अपने रब से क्या-क्या माँगा मुझे ठीक ठीक याद नहीं  क्युकी मेरे दिल की बेताबी जो की सफ़र के शुरू होते ही मचल रही थी वोह सब पिघल पिघल कर बहार निकल रही थी जैसे किसी समुन्द्र की लहर अपनी हदो को तोड़ कर निकलना चाहती हो फिर क्यों ना ऐसा होता ? कब से यह तमन्ना थी के अपने रब के आँगन में यह आंसू गिरे, ताकि इन आंसुओं को सही मुकाम हासिल हो सके.

आज हम अपने दिल की सभी तमन्नाओ को पूरा करलेना चाहते है हम अपने रब के घर के सभी कोनो को अपने हाथ से छूना चाहते है और हमारे खुदा ने आज हमें पूरी छूट दी है क्युकी इतनी बड़ी तादाद होने के बावजूद हमें अपने पास पुचकार कर बुलाकर अपनी चौखट को चूमने दिया.

अब बारी संगे-अस्वद को बोसा करने की क्युकी यह एक ज़रूरी आर्कान था जिसके बारे में हमने काफी सुन रखा था की संगे-अस्वद हर किसी को नहीं बोसा लेने देता जब तक अल्लाह की मर्ज़ी ना हो और चाहे कितनी भीड़ क्यों ना हो लेकिन जिसको चाहता है उसको खीच कर अपनी तरफ बुला लेता है.

हमने देखा संगे-अस्वद को बोसा करने के लिए कोई एक कतार नहीं थी बल्कि कई कतारे लगी हुई थी और हर कतार में जोर आज़माइश चल रही थी लोगों को अपने कपड़ों तक का ख़याल नहीं किसी का एहराम गायब तो किसी की कमीज़ फटी हुई और जो कोई घंटो ताकत लगा कर संगे-अस्वद तक अपना मूह ले जाता तो एक सेकंड भी उस शक्श को नहीं मिलता उसके पीछे वाले उसको दुश्मन बनकर पीछे  खीच लेते और निकलने में उसे एडी चोटी  का ज़ोर लगाना पड़ता जब वोह शक्श भीड़ से बाहर निकलता  तो ऐसा हाफ्ता है के जैसे मानो की किसी पहाड़ पर चढ़ा हो और दूसरी ख़ास बात यह थी की मौसम कुछ ज्यादा ही गरम था इसी वजह से थकावट ज्यादा

हो रही थी. वजह यह है की खाना-ए-काबा के दायरे में ग्रेविटेशनल फोर्स ज्यादा होता है जिस वजह से सूरज की किरनों का खिचाव ज्यादा तादाद में होता है. अब हम सोच में पड़ गए के हम कहाँ से कोशिश करें ताकि

संगे-अस्वाद तक पोहंचा जा सके मैं सोचने लगा की अगर लाइन के ज़रिये संगे-अस्वाद को बॉस लेने की कोशिश की जाए तो आज नंबर आना तो नामुमकिन है और मैं इस मिजाज़ का भी नहीं की धक्का-मुक्की करते हुए लोगों को तकलीफ पोहंचाते हुए अपने काम को अंजाम दूँ. मैंने देखा अलग अलग मुल्कों से आने वाले लोगों के डील-डौल काफी लम्बा चौड़ा था उनके मुकाबले हमारी कद काठी औसद दर्जे की थी अगर मैं उनके बीच पोहंच जाऊं तो या तो मैं दब जाऊं या गुम हो जाऊं इस लिए हमने फैसला किया की कम से कम काबे का दरवाज़ा ही चूम लूँ यह सोच कर हम खड़े हो गए और अपनी आँखें बंद कर ली और जब मैंने आँखें खोली तो मैंने अपने आप को संगे-अस्वाद के पास पाया शायद यह कुछ मिनटों या सेकंडों की ही बात थी यह कैसे हुआ मैं नहीं जानता फिर हमने देखा की मेरे आगे सिर्फ एक ही शक्श और शायद यह वोही सेहत मंद इंसान था जिसने मुझे तवाफ़ करने का तरीका बताया था के तवाफ़ कहाँ से शुरू किया जाये मैंने दिल में सोचा की अगर इनका हाथ हटे तो मैं सीधे संगे-अस्वाद से चिपक जाऊँगा मैं यह सॉच ही रहा था की वोह हाथ हटता है और मेरा पूरा मूह संगे-अस्वाद की पनाह में पोहंच जाता है और मैं इत्मीनानसे बोसा करने लगा ना जाने मैंने इस दरमियान क्या-क्या ख़ुदा से माँगा मुझे याद नहीं इस दरमियान मुझे किसी भी तरहा की आवाज़ ना धक्का-मुक्की नहीं ही किसी ने मुझे छुआ जैसे की मैं एक घेरे में हूँ जिसे हिसार कहते है. फिर मेरे ज़ेहन में ख़याल आया की काफी लोगों को बोसा करना है अब इनको भी मौका मिलना चाहिए तभी एक गैबी आवाज़ आई "क्या आप बोसा कर चुके" कुछ पल मैं सॉच में पड़ गया की इस हुजूम के अन्दर कोई मुझसे इतनी तमीज में कैसे बोल रहा है. जहाँ पर एक दुसरे को खीच खीच कर फेक रहे हों लेकिन मैंने जवाब दिया हाँ मैं बोसा कर चूका हूँ बस अगले ही पल लोगों का सैलाब टूट पड़ा और मैं बड़ी आसानी से या ये मैं कहूँ की किसी ने मुझे उस भीड़ से उठा कर दूर खड़ा कर दिया जब हम भीड़ से अलग हो कर एक जगह स्के मेरे ज़ेहन ने कहा की आवाज़ कौन दे सकता है. अब मैं समझ गया की यह मेरे खुद का दिया हुआ तोहफा था फिर मुझे याद आया आज तो ३ शाबान है यानि पैदाइशे हुसैन है. इस लिए खुदा ने हमे

अपने इनाम से नवाज़ा मैं कुर्बान जाऊं अपने मालिक पर की उसने कितनी इज्ज़त के साथ अपने भेजे हुए पत्थर पर दीदार और बॉसा दोनों करवाया हम इस मौजुज़े को ताक़यामत नहीं भूल सकते यह मेरे रब की रहमत नहीं तो क्या है ? अब अगला अरकान **"सई"** करना था हमने एक साहब से मालूम किया की **"सफा-मरवा"** कहाँ है उन्होने हमे इशारा करते हुए कहा वोह सामने है आप वहाँ जाइए वहां पर पहले से ही लोग अपने अराकान पूरे कर रहे हैं मैं उस जगह पर पोहंच गया मैंने देखा की लोग दो पहाड़ियों के बीच आ रहे हैं और जा रहे हैं (दौड़ लगा रहे है) लेकिन एक ख़ास हिस्से पर लोग दौड़ने लगते हैं मालूम येह हुआ की येह वोह जगह है जहां पर हज़रत हाजरा पानी के लिए दौड़ लगा रही थी. इस लिए यहाँ पर दौड़ना चाहिए लिहाज़ा हमने अपनी **सई** शुरू की सफा पहाड़ पे खड़े हो कर काबे की तरफ मूह किया और ३ बार अल्लाहु-अकबर कह के सफा से मरवा की तरफ कूच की और जैसे ही वोह मुकाम आया जहाँ दौड़ने का हुक्म है हमने भी वहां से दौड़ना शुरू किया इस तरह **सफा से मरवा** और **मरवा से सफा** अल्लाहु-अकबर कहते हुए **सई** पूरी की यहाँ पर हम ७ बार पैदल चले और इस बीच में हमे कई बार प्यास की शिद्दत महसूस हुई लेकिन हमने भी तय कर लिया की पानी तो **सई** पूरी करने के बाद ही पियेंगे जिस तरह आप (हजरत इस्माइल अ.स ) प्यास की शिद्दत से तडपे थे हम भी तो थोडा एहसास उस प्यास का करें और हमने भी उस दरमियान पानी नहीं पिया जबकि सई की दोनों तरफ जगह-जगह ज़म-ज़म के ठन्डे थर्मस रखे थे. जब हमारी **सई** मरवा पर ख़त्म हुई तो वहां पर हमने किबला रुख कर अल्लाह से यही दुआ की "या अल्लाह तू इस अरकान को क़ुबूल फरमा और आलमे इस्लाम की सभी परेशानियों को ख़त्म फरमा, कुल मोमिनीन की जाएज़ तमन्नाओ को पूरा फरमा, और मुसलमान के दुश्मनों को शिकस्त दे और हमारे खानदान के सभी लोगों की तकलीफ ख़तम फरमा- **"आमीन"**.

फिर हमने दो रकात नमाज़ नफिल की नियत की. जब मैं अल्हम्दुल-अल्लाह पढ रहा था तभी किसी हजरत ने मेरा रुख बदल दिया मुझे एहसास हुआ की शायद मेरा क़िबला रुख सही नहीं था. **सई** के वक्त हमने अल्लाह का एक बाँदा भी देखा जिसका एक पैर नहीं था. और वोह एक बैसाखी के ज़रिये अपनी **सई** पूरी कर रहा था. और कुछ ऐसे भी शक्श देखे जो देखने में तंदुरुस्त है काफी "मोटे-ताजे" लेकिन पहियों वाली कुर्सी पर सवार हो कर

एक दूसरा शक्श उन्हें सई करा रहा था. येह हमारे रब की शान ही तो है के पैरों वाला मजबूर ना पैरो वाला मजबूर, सुबहान अल्लाह.

नफिल नमाज़ अदा करने के बाद हरम से बहार निकल कर एक-चौथाई बाल कटवाए फिर गुसुल किया और खूब ज़म-ज़म से अपने को सेहराब करते रहे. अब वक्त-ए असर आ गया फ़ौरन वजू बना कर हरम में दाखिल हुए और जमात तैयार. असर की नमाज़ अदा करने के बाद फिर तवाफ़ शुरू किया और येह तवाफ़ हम ने अपने पूरे खानदान वालों के लिए किया फिर काबे को अपने ढंग से अलग अलग सिम्त से देखता रहा और जिस सिम्त खड़ा हुआ वही अपने रब्बुल-आलमीन के घर का पर्दा पकड लिया और जी भर कर बोस किया और लिपट कर खूब रोया अपने गुनाहों की माफ़ी मांगी इस उम्मीद के साथ के मेरा रब गफुर्रहीम है बड़ी से बड़ी गलती माफ़ करने वाला है इस लिए वोह ज़रूर हमे माफ़ करेगा.

अब वक्त-ए-मगरिब करीब था. हरम के चारों तरफ खादिम लोग मुसल्ले बिछाने लगे हम आगे वाली सफ में बैठ गए और सूरज के गुरूब होने वाला मंजर देखने लगे. काबे पर एक कबूतर का बैठना. अबाबीलों का झुंड के झुंड अपने रब के घर में चक्कर लगाना उन खूबसूरत तितलियों का काबे पर चिपकना और जब आसमान पर ऊपर निगाह की तो बादलों की ख़ूबसूरती देखने लायक थी. बादल का एक टुकड़ा ऐसा खुला हुआ जैसे मानो बरफ का पहाड़ हो और काबे को सजदा कर रहा हो और लबों पर फ़रियाद लिए हुए हो. इसी दरमियान आज़ान की आवाज़ आनी शुरू हुई अब जैसे सब थम गया हो इतनी प्यारी आज़ान , **सुबहान अल्लाह** ! लेकिन तवाफ़ करने वाले और संगे-अस्वाद के दीवाने अपने मकसद में मशगूल, लेकिन किसी की भी आवाज़ नहीं आ रही थी सिवाए आज़ान के. और हरम की रोशनी जल चुकी थी और इतना नूर, मनो दोपहर की धुप छन-छन कर काबे पर पढ़ रही हो.

इस नूरानी महॉल में नमाज़-ए-मगरिब अदा की. मेरा एक ख्वाब था की एक वक्त ऐसा मिले जब मेरे और काबे के बीच कोई हायल न हो और अब वोह घड़ी आ चुकी थी के मेरा सर काबे की चौखट पर और इस दरमियाँ हम अपने रब से बिलकुल करीब आज हमारी येह तमन्ना भी पूरी हुई (अल्हम्दुल-अल्लाह).

फिर तवाफ़ करने के लिए तैयार, और अब की तवाफ़ हम ने अपने सभी बुज़ुर्गों के लिए किया जो इस दुनिया से रुक्सत हो चुके है. अल्लाह से हमने इनकी मगफिरत की दुआ की. अल्लाह हमारी येह दुआ क़ुबूल करे **"आमीन"**. अभी भी अल्लाह के चाहने वाले ना जाने कहाँ-कहाँ से आ रहे थे और अपनी बोली में अल्लाह का घर देखते ही दुआए मांग रहे थे और चिल्ला-चिल्ला कर बच्चों की तरह रो रहे थे इस में औरतें भी थी और मर्द भी.

आखिर कार वक्त-ए-ईशा करीब आ गया. नमाज़ अदा की और काबे पर पोहंच कर वित्र नमाज़ अदा की और अपने रब से खुदा हाफिज करके अपने मुकाम जहां पर हमने कयाम किया था वहाँ के लिए रवाना हो गए रस्ते भर काबे की तस्वीर अपनी आँखों में बसा कर अपने कमरे में दाखिल हुए ऐराम उतारा और अपने सिले हुए कपड़ों में ढक गए. आज की रात काफी सुकून था इस लिए अच्छी नींद आई. सुबहा फजर पढ कर नाश्ता वगैरा कर के हम अपने एक ज़रूरी काम से फरीक हो कर मदीने के लिए रवाना हो गए. बस पर बैठकर मदीने के लिए जैसे ही बस चली, बस फिर क्या, अब तो आँखों में अल्लाह के हबीब के घर की तस्वीर नज़र आने लगी. इसकी खूबसूरती का तस्करा हमारी आँखों में बसने लगा क्युकी हमने तो इस सफ़र के पहले सिर्फ मदीने को कागज़ पर छापी फोटो में ही देखा था लेकिन जो लोग मदीने की जियारत कर चुके है उन्होंने मस्जिद-ए-नबुवी के अन्दर की ख़ूबसूरती का बयान हम से बखूबी किया था अब वोही बयान की हुई खूबसूरती को अपने आँखों में सजाए मदीने के रस्ते पर निकल चुके है. सड़क के दोनों तरफ रेगिस्तान और पहाड़ वोह भी सूखे, कई-कई किलोमीटर तक कोई बस्ती नहीं और गर्मी का येह आलम के गोरा इंसान काल होजाए और येह सफ़र एक घंटे बाद जोहर की नमाज़ के लिए एक चेक पोस्ट पर रुकता है. इस जगह हमने नमाज़ अदा की और हल्का नाश्ता किया और इसी दरमियान बस कंडक्टर ने सभी मुसाफिरों के पासपोर्ट वगैरह चेक करवाए और तक़रीबन आधा घंटा रुकने के बाद सफ़र फिर शुरू हुआ. बस कंडक्टर ने सभी मुसाफिरों के पासपोर्ट वापस कर दिए.

मैंने अभी हाल ही में हज़रत मोहम्मद (स.अ) पर एक किताब लिखी है जिस का नाम है "सेराजन-मुनीर" इस किताब में हमने **नबी-ए-करीम (सल्लाहो अलैहे वसल्लम)** की हिजरत का ज़िक्र किया है के किस तरह **नबी-ए-**

**करीम (सल्लाहो अलैहे वसल्लम)** ने मक्के से मदीने की तरफ हिजरत की. लेकिन आज जो मंज़र हम खुद देख रहे है के वीरान पहाड़ रेगिस्तानी ज़मीन और इस वक्त तो पक्की सड़क बनी है उस वक्त तो सब उबड़ खाबड़ रास्ते ही होंगे फिर येह ५०० किलोमीटर का लम्बा रास्ता हमारे रसूल (स.अ) ने कितनी तकलीफों के बाद पार किया होगा और  मदीना पोहंचे  होंगे. मैंने किताब में हिजरत का ज़िक्र तो कर दिया लेकिन एहसास आज हो रहा है के हमें तो इस्लाम सिर्फ अपनी मुसलमान माँ के पेट से पैदा हुए  हैं इस लिए लोगों ने कहा हम मुसलमान हैं. और मज़हब हमारा इस्लाम हमें तो कुछ भी मशक्कत नहीं करनी पड़ी. आज हमे इस बात का एहसास है के बड़ी कड़ी मेहनत करके इस्लाम की इमारत तैयार की  गई है अब हमारा येह मकसद है के हम इस इमारत की देख भाल करें और रंग रोगन करके उसे रोशन करते रहें. और इस इमारत को इतना बड़ा (बुलंद) करें ताकि बाकी इमारतें इसके आगे बौनी (पुस्त) नज़र आए. और उन बौनी इमारतों में रहने वाले इस्लाम की इमारत को अपना मुकाम बना लें और येह बौनी (पुस्त) (इमारते) झूटी और फॉक्ति साबित हो जाये "आमीन".

अब हमारी बस फिर एक जगह पर स्की है. यहाँ पर हमने नमाज़-ए-असर अदा की और खाना मंगाया और खाया. तकरीबन पौने घंटे स्कने के बाद हमारा सफ़र फिर शरू हुआ मदीने की तरफ. फिर वोही रेगिस्तानी इलाका, दूर दीखते ऊँठ और अब तो सूरज भी डूब रहा है येह मंज़र काफी खूबसूरत था और अब मदीना बिलकुल करीब. मुझे याद है जब **नबी-ए-करीम (सल्लाहो अलैहे वसल्लम)** मदीने में दाखिल हुए थे अपनी हिजरत के वक्त तो उस वक्त भी सूरज डूबने वाला था और जैसे ही आपने मदीने में कदम रखा सूरज डूब चूका था और येह वक्त-ए-मगरिब था. ठीक ऐसा ही वक्त था के जैसे ही मेरी बस मदीने के बस डिपो में पोहंची वैसे ही मगरिब की आज़ान हने लगी. सामने मस्जिद थी हम मस्जिद पोहंचे वजू बनाया जमात में शरीक हो गए. नजाज़ अदा करने के बाद हमने लोगों से होटल का पता वगैरह मालूम किया तो मालूम हुआ मस्जिद-ए नबुवी के पास तमाम होटल वगैरह मौजूद है. हम इसी तरफ पैदल चलते-चले गए. लेकिन कोई होटल नज़र नहीं आ रहा है. थोड़ी मुझे फ़िक्र हुई फिर भी हम उसी सिम्त में चलते गए फिर अचानक मुझे एक शक्श आता दिखा तो मैंने सोचा चलो उसी से पूछ कर देखते है और हमने  जैसे ही उस से ठहरने  का ज़िक्र किया वोह बड़े अदब से बोला आप कितने लोग है ? मैंने

कहा मैं तो अकेला हूँ , बोल ठीक है आइये हम आप को होटल ले चलते है और कहा आप को २० रियाल देने होंगे. और दोपहर २ बजे आपको चेक-आउट करना होगा मैंने कहा ठीक है वह साहब आगे-आगे और हम पीछे-पीछे फिर उन साहब ने इशारे से बताया की वोह रही **मस्जिद-ए-नबुवी** अब जो हमने अपनी नज़र दौड़ाई तो ऐसा लगा किसी बादशाह का महल शायद यह अलफ़ाज़ भी अदना है. फिर उसने कहा यह रहा खाना-खाने का होटल और फिर वोह मुझे अपने होटल में ले गया मुझे रूम में छोडा और चाबी मेरे हवाले करते हुए बोला मैं एक डॉक्टर के पास जा रहा था क्युकी मेरे दांत में दर्द हो रहा था. लेकिन आप मिल गए तो मैंने सोचा आप नए है क्यूना आपको होटल तक पोहांचा आऊ, बड़ा नेक बाँदा था जरूर यह अल्लाह ही की मदद थी जो हम तक पोहंची.

हम बैठे बैठे काफी थक चुके थे कपडे निकाल कर बाथरूम में गए गुसुल किया कपडे बदले और फ़ौरन **मस्जिद-ए-नबुवी** की तरफ चल पडे जो-जो **मस्जिद-ए-नबुवी** की दूरीयाँ ख़त्म होती गयी ख़ूबसूरती निखरती गयी मुह में एक ही अल्फाज़ सुब्हान-अल्लाह सुब्हान-अल्लाह अभी तो हम बहार ही खड़े है तो मेरा दिल दिमाग सब कुछ भूल चूका बस **नबी-नबी** की सदा आ रही है अब हमने सोचा चलो हबीब-ए-खुदा (स.अ) की चौखट में कदम रखे और जैसे ही अन्दर पोहंचे बस मुह से एक अलफ़ाज़ निकला "अल्लाह ने अपने घर को तो घर बनाया लेकिन अपने हबीब (स.अ ) के मुकाम को महल बना दिया" इतना बड़ा महल वोह भी नूर से सारा-बोर, सीधे चले तो चलते चले जाएँ, बाएं चले तो चलते चले जाएँ और अगर दायें चले तो चलते चले जाएँ आज रसूल का महल देखने के बाद ऐसा लगा अब कोई चाहत नहीं इस दिल में, आज सारी आरजू पूरी हो चुकी जब दिल की धड़कन कुछ थमी तो सोचा चलो अपने रसूल (स.अ ) के रोज़े का दीदार किया जाए . पहले तो खुद तलाश करते रहे फिर वहां पर मौजूद एक बुजुर्ग से मालूम किया तो उन्होंने बताया के रोज़ा तो अन्दर है तब मुझे एहसास हुआ के मुझे बायीं तरफ जाना था लेकिन हम दाई जानिब चल रहे थे. अब मुझे अपने नबी (स.अ ) की आराम गाह का पता मालूम हो चूका था अब हम उसी सिम्त चलते-चले जा रहे थे यहाँ पर अदब साफ़ दिख रहा था कोई आवाज़ नहीं सर झुके हुए और तेज़ होती धडकने की अब इस कायनात के मालिक के महबूब (स.अ ) का दीदार अब होने ही वाला है आहिस्ता-आहिस्ता रफ़्तार यहाँ तक अपने क़दमों की आवाज़ भी नहीं सुनाई पड़ी और फिर देखा की

अल्लाह के महबूब के दरबार में ४ से ६ दरबारी खड़े पहरेदारी कर रहे है यहाँ पर हम एक बात और कहना चाहेंगे की अल्लाह-रब्बुल-इज्ज़त ने अपने घर (काबे) के दरवाज़े पर तो सिर्फ एक पहरेदार ही लगाया लेकिन अपने महबूब के घर में ६ पहरेदार लगाये "सुब्हान-अल्लाह" जब हमारा पालनहार अपने महबूब की शान में अपने से ६ गुना ज्यादा मोहब्बत फार्म रहा है तो हम और हमारी क्या हस्ती की अपने रसूल (स.अ ) की शान मे कोई कमी रखे जब की हमारे रब ने आप से ६ गुना ज्यादा मोहब्बत फरमाई.

हम भी अदब से सर झुकाए अपने रसूल (स.अ ) को दुरूद-ओ-सलाम पढ़ते रहे. यहाँ पर वक्त जैसे रूक गया है, फिर हमने अपनी गुनाह-गार आँखों से अपने रसूल (स.अ ) की आराम गाह देखि जिन्हें देखने के लिए तरसती थी. आज अपनी आँखों की अहमियत मालूम हुई के मेरे रब ने आँखे आज के दिन अपने हबीब के महल पर छाए नूर से सेहराब होने के लिए बनाई थी.

अल्लाह-रब्बुल-इज्ज़त ने अपने महबूब जनाबे मोहम्मद (स.अ ) के चाहने वाले सहाबा को भी अपने पास ही रखा ताकि अल्लाह के हबीब को ख़ुशी हासिल हो. हमने देखा की रसूल की चौखट के सामने दुनिया भर के लोगों की भीड़ जमा है और सब अपनी अपनी ज़बान में अपने रसूल पर सलाम भेज रहे है और अल्लाह इन लोगों पर अपनी रहमत नाज़िल कर रहा है.

तभी ईशा की जमात का वक्त हो गया हम उसी रोज़ए मुबारक के सामने जमात बनाकर खड़े हो गए और नमाज़ अदा की और बारगाहे इलाही में शुक्रिया अदा किया के आज हम अल्लाह और उसके रसूल (स.अ) के बीच खड़े है आगे सज्दाए खुदा कर रहे है और हमारी पुश्त पर मोहम्मद (स.अ) की शफात और शफक्कत का हाथ आज हमे अपनी किस्मत पे नाज़ हो रहा है.

नमाज़े ईशा पढने के बाद दो रकात नमाज़-ए-नफिल उस जगह पर पढ़ी जहाँ हज़रात बिलाल अज़ान दिया करते थे और नबी-ए-करीम (स.अ) खुदबे के लिए खड़े हुआ करते थे. अब हमारी ख्वाइश थी के वोह सब्ज़ गुम्बद जो हम तस्वीरों में देखा करते थे उसको देखा जाए इसलिए हम मस्जिद-ए-नबुवी से बहार निकल कर कंपाउंड में आ गए और निगाहें ऊपर फिराते गए और वोह हरा गुम्बद अब हमारी नज़रों के सामने था और उस गुम्बद पर

आसमान से नूर बरस रहा था मस्जिद की खिदमद के लिए हज़ारों खादिम अपने काम में मशरूफ थे, पूरा इलाका शीशे की मानिंद साफ़ और चमकता हुआ नज़र आ रहा था. और ज़ेहन में सुकून इतना जो इस्से पहले कभी नसीब नहीं हुआ था.

मस्जिद-ए-नबुवी के चारों तरफ एक खूबसूरत सी मार्किट, जो शायद कभी बंद भी होती है या नहीं मैं नहीं कह सकता अब रात के १० बज रहे है. मस्जिद-ए-नबुवी के दरवाजे बंद करदिये गए और हम अपने रहने के मुकाम पर लौट आये, खाना खाया, फिर दिल में आया चलो एक बार फिर जाकर देखे, आँखों को ठंडक पोहंचाए और हमने ऐसा ही किया. मस्जिद के इर्द-गिर्द घूमता रहे. जब काफी रात हो गई तो लौट कर अपने कमरे पर सोने की नीयत से आगया. इस वक्त रात के तक़रीबन १.३० बजे थे सोने की कोशिश नाकाम थी क्युकी सुबह तहज्जुद मस्जिद-ए-नबुवी में ही पढना थी उसी इंतज़ार में नींद गायब थी इसी दरमियान रात के ३.५० बज गए हमने फ़ौरन गुसुल किया और तेज़ क़दमों से हरम के लिए रवाना हो गया. जब हम हरम से कुछ दूरी पर थे तो हरम के चमकते हुए बड़े बड़े बंद दरवाज़े खुलने लगे ऐसा लगा किसी शहंशाह का दर हंस कर , आनेवालों का इस्तेग्बाल कर रहा है "सुब्हान-अल्लाह" ! यह हसीन नज़ारा हमने आज तक कहीं नही देखा था . कोशिश तो हमारी येही थी के हम हरम में सबसे पहले पोहंचे लेकिन ऐसा मुमकिन नहीं हुआ क्युकी कुछ लोग हमसे पहले आ चुके थे इस लिए पहले हरम में वोही पोहंचे. सबसे पहले रोज़ाए मुबारक पर पोहंचकर सलामी भरी. जी भरकर अपने रसूल (स.अ) की आराम गाह देखता रहा तभी तहज्जुद की आज़ान हुई, हम इमामत की जगह पर पोहंचे और दूसरी सफ में बैठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी और कुरआन लेकर पढने लगा. बड़ा ही नूरानी माहौल था. वक्त-ए-फजर आया और उस वक्त पूरी मस्जिद-ए-नबुवी नमाजियों से खचा-खच भर चुकी थी. नमाज़ अदा करने का यहाँ अपने लिए एक अच्छा मौका था. क्युकी आज तक फज़र में इतनी बड़ी जमात हमे नहीं मिली थी नमाज़ पढ़कर बहार निकला तो टैक्सी वाले १० रियाल में जियारत के लिए आवाज़ लगरहे थे. हमने सोचा अच्छा मौका है चलो सुब्हा-सुब्हा जियारत कर ली जाए और हम टैक्सी में बैठ गए कुछ देर बाद उसकी टैक्सी भर गई सबसे पहले हम लोग **जंगे ओहद** से "७० शहीदों" जिसमें नबी-ए-करीम (स.अ) के चचा जनाब अमिर-ए-हम्ज़ा की भी कबर थी. यह

जगह चार दीवारी से घिरी हुई थी और ओहद नाम का पहाड़ सामने मौजूद था. फिर यहाँ से हम लोग मस्जिद-ए-कुबा पोहंचे. यह वोह मस्जिद है जिसे नबी-ए-करीम (स.अ) और उनके तमाम साथियों ने मिलकर बनाई थी. यहाँ पर हमने २ रकात नमाज़ नफिल पढ़ी इस मस्जिद को "किब्लातैन" भी कहते हैं. लेकिन यह मस्जिद तो पूरी तरहा से पक्की बन चुकी थी जब्की नबी (स.अ) ने इस मस्जिद को खजूर के तानो और पत्तो से बनाई थी. उसके बाद हमे जियारत के लिए जंगे "खन्दक" की जगह पर लेजायागा जहाँ पर जंगे "खन्दक" लड़ी गई थी. उन जगह की जियारत करने के बाद हम वापस अपने मुकाम पर आगए रात भर जागते रहने की वजह से थकान सवार थी सोचा ज़रा सो लें लेकिन फिर ख्याल आया के मक्का पोहंचना है दुसरे उमरेह के लिए बस थकान को भूल कर मक्के के सफ़र पर निकल पड़े, फिर बस का सफ़र शुरू, वोही गर्मी का आलम, लेकिन एयरकंडीशन बस की वजह से अन्दर गर्मी का आलम मालूम नहीं पड रहा था.

हमारी बस अपनी तेज़ रफ़्तार में आगे बढ़ी जा रही थी अन्दर कुछ लोग एहराम ही हालत में थे, तो मैंने लोगों से दरयाफ्त किया की मुझे एहराम बांधना है क्या मुझे मौका मिलेगा तभी हमारी उम्र से कुछ छोटा आदमी उसने कहा आप परेशान ना होइए हमे भी एहराम बांधना है हम आपको सब बता देंगे और हम भी लखनऊ के हैं. जब हमने उसे अपने वतन वाला सुना तो फ़ौरन उसी की पास जा कर बैठ गए. उसने हमारे मुताबिक़ काफी बाते की खासकर हमारे वतन के बारे में यह एक नेक दिल इंसान था. हमारी गुफ्तगू चल ही रही थी तो हमारी बस ने एक मोड़ लिया तो हमारे इस सफ़र के दोस्त ने कहा के मिकात आ गयी है आप अपना एहराम निकाल कर मेरे साथ चलिए मैंने ऐसा ही किया फिर उस दोस्त ने मुझे बताया की मदीने से जो लोग उमरे के लिए निकलते है वो यहीं से एहराम बांधते है और यह मदीने वालों की मिकात कहलाती है. फिर हमने गुसुल किया और एहराम बांधकर २ रकात नमाज़ पढ़ी और अपनी बस पर लौट आये बस ने अपनी रफ़्तार पकड़ी और हम इस नए दोस्त से गुफ्तगू में मशगूल हो गए . उसने बोहत कुछ सऊदी सरकार के बारे में मुझे बताया, और उसके काम काज का भी ज़िक्र किया तक़रीबन ३ घंटे मुसल-साल बस चलकर एक जगह स्की यहाँ पर हमने ज़ोहर की नमाज़ अदा की और हमारे दोस्त ने बिस्कुट और जूस वगैरह लिया और जब मैंने बिल देना चाहा उसने दुकानदार से कहा खबरदार इनसे

पैसे मत लेना यह हमारे मेहमान हैं और उस दोस्त ने बिल अदा किया. आधे घंटे तक हमने इस जगह पर आराम किया और मुझे याद आया यह वोही जगह है जहां हमने नमाज़-इ-असर अदा की थी जब हम मदीने को जा रहे थे.

तभी बस वाले ने आवाज़ लगाईं बस में बैठने की. हम सभी बैठ गए और सफ़र दुबारा शुरू हुआ फिर दुबारा हम दोनों की गुफ्तगू शुरू हुई हमने अपने दोस्त से कहा की मुझे कुर्बानी भी करनी है तो उसने मुझसे कहा हम जानते है कुर्बानी कहाँ होती है, और आपका यह काम भी हो जाएगा क्युकी हमारी बहन के घर के पास ही कहीं इसका इंतज़ाम है, यह सुनकर हम बोहत खुश हुए चलो यह काम भी हम आराम से कर लेंगे और हमने खुदा का शुक्र अदा किया के उसने हमारे लिए कितने इंतज़ाम कर रखे हैं.

जब हमारी बस मक्का पोहांची तो उस वक्त **असर** हो चुकी थी फ़ौरन वजू बनाया और दोनों ने **नामज़-ए-असर** अदा की और फिर शुरू हुआ तवाफ़ का सिल-सिला तवाफ़ करने का अपना अलग ही फायदा है, फिर सीई पूरी की और नफिल नमाज़ अदा की इसी दरमियान **नमाज़-ए-मगरिब** का वक्त आगया हमने अपने दोस्त से कहा देखो अब सारी सफ भर चुकी हैं लेकिन जो लोग काबे के बिलकुल करीब तवाफ़ कर रहे हैं उनमे शरीक हो जाओ ताके **नमाज़-ए-मगरिब** अदा की जा सके इस लिए हम दोनों हातिम की जगह पर रुक गए और जमात में शरीक हो गए उसके बाद काबे का पर्दा पकड़ कर हाले दिल बयान किया. अब हमें कुर्बानी करनी थी इस लिए हम दोनों हरम से बहार निकले और हमने अपने इस दोस्त से कहा चलो कुर्बानी की जाए तो उसने अपना मोबाइल फ़ोन इस्तेमाल करके कुर्बानी के बारे में सही-सही पता दरियाफ्त किया फिर हम दोनों ने टैक्सी तय की और कुर्बानी करने के लिए निकल पड़े तक़रीबन १५ मिनट बाद हम दोनों हलाला नाम की जगह पर

पोहंचे और टैक्सी के पैसे हमने ज़बरदस्ती दिए यहाँ पर पोहंच तो गए लेकिन अभी-भी बकरा मंडी दूर थी फिर उसने किसीसे मालूम किया तो मालूम पडा अब सामने वाली गली में एक बकरा मंडी है, यह रात कर वक्त था इसलिए थोड़ी दिक्कत पेश आ रही थी. अब जो हमने निगाह दौड़ाई तो देखा रात के अंधेरे में कई काले काले शक्ल के लोग सेफ्रोन  रंग के झुब्बे पहने और हाथ में छूरे लिए टहल रहे हैं हम लोगो को आता देख वो लोग भी हमारी तरफ आने लगे तभी हमारे दोस्त ने उन लोगों से अरबी में बात की मुझे नहीं पता वोह क्या बात कर रहे थे फिर हमारे सामने एक बकरा लाया गया फिर उसकी सिंग, कान, दांत वगैरह दिखला कर उसने २५० रियाल मांगे हमारे दोस्त ने कहा हाँ इतना ही खर्च आता है हमने रुपये चुका दिए . फिर उसके एक आदमी ने एक प्लास्टिक का टुकडा बिछाया और बकरे को पलट दिया बकरे  ने बड़ी आसानी से अपनी कुर्बानी पेश की. उसने छूरा मेरे हाथ में दिया लेकिन अपना हाथ भी लगाए रखा इस तरहा हमने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार अंधेरे  में कुर्बानी  पेश की फिर हमने उन्ही लोगों से कहा सारा गोश्त गरीबों में तकसीम करदेना और कसाई को २० रियाल दिए उसका मेहनताना. कुर्बानी अदा करके हम दोनों टैक्सी से हरम पोहंचे फ़ौरन वजू बनाया क्युकी ईशा की जमात कड़ी हो चुकी थी इस लिए नमाज़ अदा की लेकिन जगह हरम से बहार मिली अब क्युकी हमारे दोस्त को मदीना वापस जाना था इस लिए उसने कहा आप बाल वगैरह कटवाइए यह कहकर वो हमें एक बाल काटने वाले की दूकान पर ले गया और कहा आप जब तक बाल कटवाए फिर हम भी १० मिनट में लौट कर आ रहे है. हमने कहा हाँ ठीक है आप हमे यहीं बैठा पायेंगे मेरे बाल कट गए हम उनका वहाँ  इंतज़ार करते रहे लेकिन **वो** दोस्त आधा घंटा गुज़रने के बाद भी नहीं आए फिर अपने बाल काटने वाले से कहा की हम नाहा कर आते है अगर हमारे  दोस्त आए तो उनसे कहियेगा के हम १० मिनट में लौट कर आ रहे हैं.

हमने गुसुल वगैरह किया कुरता पैजामा पहना और फिर उसी बाल काटने वाले के पास लौट आये लेकिन अब तक हमारे दोस्त  लौट कर नहीं आये फिर भी हमने उनका वहीं  बैठे-बैठे  काफी इंतज़ार किया लेकिन वोह एक नेक दोस्त कहाँ गायब हो गया खुदा जाने !  ना हम उसे अपना फ़ोन नंबर दे सके और न वोह हमें .

अब प्रोग्राम के मुताबिक आज की रात हमें काबे के पास बैठकर गुजारनी है और रात भर अपने आप को हरम के नूरानी माहौल से सेहराब करते रहना है. इसी लिए हमने कई तवाफ़ किये और फिर अपने परवरदिगार से मांगता राहा और फिर अपने रब के आँगन में थोडा सोने की चाह भी थी वोह भी पूरी करनी थी.लेकिन इसी दरमियान दरियों को साफ़ करने वाले आ गए तो हम वहां से उठकर वज़ू करने चले गए और वज़ू  से फारिक हो कर हम फ्रेश हो गए और आगे की साफ में बैठ गए और अपने रब के घर पर आने वाले लोगों को निहारते  रहे के किस तरहा लोग खुदा के दीवाने हैं और तक़रीबन हर गेट से पता नहीं कौन कौन से मुल्क से रात भर झुंड के झुंड आते रहे एक पल भर के लिए भी अल्लाह के घर के पास से लोग जुदा नहीं हुए और नज़र ऐसा आता था जैसे मानो कोई गुलाब खिल रहा हो , इसी दरमियान तहज्जुद की आज़ान हुई और हमने नमाज़ अदा की फिर उसी जगह पर बैठे रहे और ज़म -ज़म पीते रहे फज़र की नमाज़ का इंतज़ार करते रहे फिर फज़र की नमाज़ पढ़ कर हम हरम से रुक्सत हुए लेकिन एक नयी ताकत के साथ.

अपनी बस पकड़ी और जेद्दाह अपने होटल पर वापस आ गए पिछले २ दिन से जगे हुए थे इस लिए खूब सोए फिर हमने अपने कुछ काम वगैरह पूरे किये और फिर जुमे का वक्त आ गया तो आज हमारा एक साला जो की हमारे चाचा ससुर का बेटा है वोह मुझे अपनी गाडी से मक्का ले गया और हमने मक्के में एक और जुमा अदा किया फिर तवाफ़ करके दो रकात नमाज़ पढ़ी और आज मेरा यह

अलविदा-इ  तवाफ़ था हमने अपने रब से दुआ की. या रब मुझे बार-बार अपने घर में बुला और हमारे पूरे खानदान को अपने घर का दीदार करा और इस तरहा हम अलविदा-इ तवाफ़ करके अपने मुकाम लौट आये थोडा बोहत तबर्रुक वगैरह लिया ताकि लोगों में तकसीम कर सकू और आज मुझे अपने वतन लौटना था तक़रीबन रात १ बजे की फ्लाइट थी इस लिए मुझे १० बजे एअरपोर्ट पोहंचना था. इसी लिए हमारा साला अपनी गाडी से हमे एअरपोर्ट ले गया जब हम एअरपोर्ट पोहंचे तो मुझे फिर वोही २ बुजुर्ग शक्श मिले जो आते वक्त मेरे साथ बैठे थे. मुझे मिले और बड़े खुस हुए के चलो सफ़र अच्छा कटेगा, सारी  कारवाही पूरी करने के बाद हमारा सफ़र फिर हिन्दुस्तान के लिए शुरू हो गया और तक़रीबन ४ १/२ घंटे के बाद जाहाज़ मुंबई एअरपोर्ट पर लैंड हुआ. अल्लाह ने जिस हिफाज़त से अपने घर बुलाया था उसी हिफाज़त के साथ हमे वापस भेज दिया. एअरपोर्ट से बहार आये तो हमारे चाहने वाले हमारे  इस्तकबाल  में खड़े थे.

**हमारी येही तमन्ना है रब से की मुझे और इस सफ़र-नामा को पढ़ने वालों को हज और उमरह करने की तौफीक आता फरमाए.**

**इंतज़ार  इंतज़ार  इंतज़ार**

**शुक्रिया**

**नुसरत आलम शेख**